International Journal of Advanced Education and Research
ISSN: 2455-5746, Impact Factor: RJIF 5.34
www.alleducationjournal.com
Volume 1; Issue 8; August 2016; Page No. 01-04

परम्परागत विचार–शक्ति से सहस्राब्दी की ओर : एक नवीन मोड़

आरती सिंह

असिसटेन्ट प्रोफेसर, फैकल्टी ऑफ एजूकेशन, दयालबाग़ एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट, दयालबाग़, आगरा, उत्तर प्रदेश, भारत।

सारांश

ब्रह्माण्ड की नश्वर वस्तुएं, यथा–जंगल, पर्वत, स्त्री–पुरुष, पशु–पक्षी आदि की पष्ठभूमि में एक दसूरा संसार है– विचारों की शाश्वतता का संसार। जब व्यक्ति जन्म लकेर संसार में आता है तब उसके अन्दर असंख्य विचारों के पुन्ज होते हैं। ये विचार व्यक्ति की मानसिकता से उद्भूत होकर शारीरिक संचालन से जुड़ जाते हैं व व्यावहारिक क्रियाएं इनसे अनप्राणित होती हैं। विचार बहुत सी संवेदनाओं के सम्बन्धों के परस्पर एकात्मकता का संज्ञानात्मक प्रभाव है। सहस्राब्दी मे विचारो में भौतिकता तथा क्षणिक सुख की प्राप्ति अधिक व्याप्त है तथा चतेना व मनश्चेतना के लिए कोई स्थान नही है। परम्परागत विचार–शक्ति का प्राथमिक उद्देश्य व्यक्तिगत मनश्चतेना को ऐसी स्थिति में रूपान्तरित करना था कि वह अपरिवर्तनशील सुख अथवा आनन्द की स्थिति प्राप्त कर सके। परम्परागत विचार–शक्ति तथा आधुनिक विचार–शक्ति के सर्वतोमुखी संश्लेषण के प्रक्रम को पूर्ण करने के लिए यह आवश्यक है कि सहस्राब्दी की परिवर्तित अभिधारणा के परिप्रेक्ष्य में आधुनिक युग की वैचारिक संरचना का पुनर्विन्यास किया जाए। मनुष्य, जो एक नवीन युग का निर्माता तथा संरक्षक है, उसे सदैव विचारों को प्रकट करने में सावधानी बरतनी चाहिए, तभी एक प्रगतिशील युग का निर्माण हो सकेगा। नवीन विचार–बल उत्पन्न करके नवीन सभ्यता की रचना की जा सकती है।

मूलशब्द: परम्परागत विचार–शक्ति, आधुनिक विचार–शक्ति, सहस्राब्दी, चेतना, व्यक्तिगत मनश्चेतना

प्रस्तावना

विचार की उत्पत्ति व प्रकृति

सर्वप्रथम विचार–शक्ति के संदर्भ मे यह प्रश्न उद्वेलित करता है कि विचारो की उत्पत्ति किस पकार हुई ? विचार अनुभतू कठिनाई से उत्पन्न होता है। यह विचार ही है जो सदैव उत्पन्न होने वाली कठिनाई का समाधान प्रस्तुत करता है। विचार मन का विषय है अर्थात मन द्वारा जब किसी पूर्वानुभूत अथवा पूर्वदष्ट विषय का चिंतन किया जाता है तब उस विषय पर विचार की प्रक्रिया प्रारम्भ हो जाती है। चरकोपस्कार में विचार के सम्बन्ध मे कहा गया है कि– ''विचार्यम गुणतो दोषतो या यत विवेच्यते'', अर्थात मन के द्वारा गहीत विषय के गुण–दोष की विवेचना की क्रिया ही विचार है। विचार शब्द की उत्पत्ति चिर धातु (तत्वनिर्णये अर्थ में) 'वि' उपसर्ग तथा घञ प्रत्यय लगाने से होती है। (वि+चिर्+घञ्–तत्व–निर्णये तद्गुणावगुणे वाक्यस्तोमे च)। किसी वस्तु, पदार्थ अथवा विषय के गुण व अवगुण की विवेचना करना अथवा उसके गुण व अवगुण का ज्ञान प्राप्त करना विचार कहा जाता है।

जब व्यक्ति जन्म लेकर संसार में आता है तब उसके अन्दर असंख्य विचारों के पुन्ज होते हैं। ये विचार व्यक्ति की मानसिकता से उद्भतू होकर शारीरिक संचालन से जुड़ जाते हैं व व्यावहारिक क्रियाएं इनसे अनुप्राणित होती हैं क्योकि भौतिक शरीर पदार्थ से सम्बन्धित है। विचार बहुत सी संवदेनाओ के सम्बन्धो के परस्पर एकात्मकता का संज्ञानात्मक प्रभाव है। प्रत्यक्षीकरण का विचार बुद्धिमत्ता की प्रथम अभिव्यक्ति है। विचार किसी आह्वान को दिया जाने वाला उत्तर है। विचार का अर्थ कृति (करना) नहीं है, वरन ये स्मति से प्रेरित होता है। विचार का अर्थ है– स्मति का शब्दबद्ध आलेख। हमारी सारी विचार–शक्ति हमारे बोध की प्रक्रिया है। भदे व अन्तर निमिर्त करना विचार का गुण है। दिशा, काल, वियोग या दुःख का ज्ञान विचार–शक्ति से होता है।

ब्रह्माण्ड की नश्वर वस्तुएं, यथा–जंगल, पर्वत, स्त्री–पुरुष, पशु–पक्षी आदि की पष्ठभूमि में एक दूसरा संसार है– विचारों की शाश्वतता का संसार। यहाँ यह सार्वभौतिक सत्य है कि सष्टिकर्त्ता के मनस में भी सष्टि निर्माण से पूर्व उसका विचार आया होगा तत्पश्चात सष्टि का सजन किया गया होगा। यह तथ्य सिद्ध करता है कि विचार अनश्वर व वस्तु से परे हैं तथा अभौतिक एवं दिक–काल से स्वतन्त्र हैं। किन्तु सांसारिक दष्टि से विचार सार्वभौमिक व सामान्य हैं तथा विशिष्ट नहीं हैं। इस प्रकार प्रारम्भ में कहा गया कथन वास्तविक पत्रीत होता है कि विचार के द्वारा गुणावगुण की विवेचना की जाती है। समस्त सष्टि को देखने पर यह ज्ञात होता है कि परमचेतना ने सष्टि के निर्माण से पूर्व अवश्य ही उसके गुणावगुणो का विश्लेषण करके ही उसका निर्माण किया गया होगा, तभी यदि सष्टि में सजन है तो दूसरी ओर उसमें विनाश भी परिलक्षित होता है, अन्यथा सष्टि जैसी पूर्व में थी, उसी प्रकार आज भी होनी चाहिए थी। अतः यह मान्य है कि विचारों को ज्ञानेन्द्रियों से न समझकर तर्क व विवेक से समझ सकते हैं। विचार व्यापक व गत्यात्मक शक्ति है। एक शक्तिशाली विचारों से युक्त व्यक्ति अन्य व्यक्तियो को प्रभावित कर सकता है।

विचार व्यक्ति की सीमा निर्धारित करता है। जब व्यक्ति अपने विचारों को नियंत्रित करने की शक्ति रखत हैं, वे इहलोक में पूज्यनीय है। विचार वह वहद शक्ति है जो जीवन को नियन्त्रित करती है, चरित्र को आकार पद्रान करती है तथा भाग्य को निर्धारित करती है। विचार–शक्ति एक समष्टि है। इसे समस्त मानसिक क्रियाओ का सर्वोच्च प्रेरणास्रोत भी कह सकते हैं। विचार पृथ्वी पर एक महान बल है। सृजनात्मक विचार हस्तानान्तरित, नवीनीकृत तथा पुनर्निर्मित होते रहते हैं। यह मनस् की विविध दशाओ से प्रभावित होते हैं। विचार सजीव व शाश्वत हैं तथा विशिष्ट दिशा निर्धारित करते हैं। विचार–शक्ति के द्वारा कोई भी कार्य असम्भव नहीं है। प्रत्येक व्यक्ति अचतेन रूप से अधिक या कम मात्रा में विचार–शक्ति को अनुभव करता है। विचार–शक्ति से तात्पर्य अवधारणाओं, संकल्पनाओं, निर्णयों, सिद्धान्तों आदि में वस्तु जगत को परावर्तित करने वाली सक्रिय प्रक्रिया जो विविध समस्याओं के समाधान में जुड़ी है, विशेष रूप से संगठित मस्तिष्क की उच्चतम उपज से है।

सूचना प्रौद्योगिकी के युग में मानवीय विचारों की गति

इक्कीसवीं सदी सूचना प्रौद्योगिकी की शताब्दी है, जिसमें मानव

मनस् की विचार–शक्ति मात्र मानव तक ही सीमित नहीं रह गई, जिसमें कर्त्ता तथा भोक्ता स्वयं मानव होता है, वरन् मानव द्वारा निमिर्त यंत्र–मानव द्वारा भी उसकी विचार–शक्ति संचालित होती है। यद्यपि यह सत्य है कि मनुष्य ही वह विचारशील प्राणी है जो नित नये विचारों को जन्म देने की क्षमता रखता है, साथ ही विचारों पर चिंतन और मनन करके नवीन आयाम प्रस्तुत करता है और यंत्र–मानव का जन्मदाता भी वही है। स्पष्ट है कि मानव में मात्र विचार की ही शक्ति नहीं है वरन् उस विचार के विषय में भी वह विविध प्रकार से विचार करके आश्चर्यजनक परिणाम प्रदान करता है। सूचना प्रौद्योगिकी के युग में मानवीय विचारों की श्रंखला त्वरित गति से सहस्रों याजेन की दूरियां तय करती हुई विश्वव्यापी नेटवर्क बुन रही है, जिसका उद्गाता भी मानव ही है, क्योकि उसने ही वैज्ञानिक व्यवस्थाओं तथा प्रविधियों का प्रयागेात्मक रूप तैयार करके तकनीकी विज्ञान को जन्म दिया है।

शाश्वत काल से यह मान्यता रही है कि सम्पूर्ण ज्ञान का मूल स्राते वेद ही हैं, जो प्राचीन भारत के ऋषि मुनियों की मनश्चतेना में स्वतः प्रकट हुए। प्राप्य वैदिक साहित्य के आधार पर वैदिक अथवा परम्परागत विचार को आधुनिक ज्ञान की परिकल्पनाओं के संदर्भ में समझना कठिन प्रतीत होता है। आधुनिक विचारों की यह धारणा अत्यन्त संदेहास्पद है, जिसके अनुसार परम्परागत विचार–शक्ति आयुक्तिसंगत तथा आधुनिक विज्ञान से असम्मत मानी जाती है। पिछले कुछ दशकों में हुई तकनीकी की आश्चर्यजनक उपलब्धियों तथा कम्प्यटूर के द्वारा मानव मस्तिष्क क्षमता के अपरिमित विस्तार ने कतिपय वैज्ञानिकों में यह धारणा उत्पन्न कर दी है कि आधुनिक विज्ञान ही दृष्ट जगत का ज्ञान प्राप्त करने का एकमात्र युक्तिपूर्ण स्राते है (Weizenbaumg, 1988)। अतः सामान्यतः यह मान लिया जाता है कि आधुनिक ज्ञान पद्धति को छोड़कर परम्परागत विचार–शक्ति आधुनिक मानव समाज के लिए निरर्थक है। आधुनिक विज्ञान एक अत्यन्त मौलिक वैचारिक संकट में है, जिससे इस धारणा पर गम्भीर संदेह उत्पन्न होता है कि वैज्ञानिक पद्धति ही ज्ञान प्राप्त करने की एकमात्र युक्तिपूर्ण विधि है, जबकि परम्परागत विचार की मान्यता के प्रचुर उल्लेख मिलते है यह भी सम्भव है कि आधुनिक व परम्परागत विचार प्रतिनिधायन की भिन्न–भिन्न विधाएं हों, जो विभिन्न तार्किक मान्यताओं पर आधारित हो। Kuhn (1970) के अनुसार विविध तार्किक मान्यताओं पर आधारित विचार भले ही परस्पर अनुवादनीय तथा समतुल्य न हों परन्तु उनमे ंसमरूपता स्थापित की जा सकती है (Sommarfeld, 1964)।

वैचारिक स्थिति के परिवर्तन हतेु परम्परागत विचार–शक्ति मे ंप्रविधि का विकास

एक अत्यन्त मौलिक प्रश्न उद्वेलित करता है कि क्या दष्ट ज्ञानार्जन के लिए इन्द्रियानुभूति प्रतीति आवश्यक प्रतिबन्ध है अथवा चतेना से संयुक्त मानव मनस स्वयं अन्तः प्रज्ञा द्वारा प्रत्यक्ष ज्ञान को दष्टिगत करने में सक्षम है ? परम्परागत विचार–शक्ति का प्राथमिक उद्देश्य व्यक्तिगत मनश्चेतना को ऐसी स्थिति में रूपान्तरित करना था कि वह अपरिवर्तनशील सुख अथवा आनन्द की स्थिति प्राप्त कर सके। सहस्राब्दि में विचारों में भौतिकता तथा क्षणिक सुख की प्राप्ति अधिक व्याप्त है। इस शताब्दी में चतेना तथा मनश्चेतना के लिए काई स्थान नहीं है, वरन यह सदी वैज्ञानिक विचारों, सूक्ष्म तथा जटिल तकनीकी की सदी है, जिसमें यंत्रीकरण तथा मशीनीकरण को अधिक महत्व दिया जाता है। इसके विपरीत परम्परागत भारतीय विचारकों ने व्यक्तिगत मनश्चेतना की प्रक्रिया के महत्व को समझ लिया था। मनस के एक घटक चित्त में दष्टज्ञान की प्रक्रिया के द्वारा ही मनश्चेतना का अभिलक्षण होता है। सामान्य चतेना की अवस्था में चित्त का अनियन्त्रित व्यवहार ही उसकी स्वाभाविक प्रवत्ति है। अतः परम्परागत विचार–शक्ति में एसेी प्रविधि के विकास को प्राथमिकता दी गई जिसके द्वारा दष्टा की वैचारिक स्थिति के परिवर्तन को स्वच्छा से नियंत्रित किया जा सके, जिसे पतञजल योग दर्शन मे ंभी परिभाषित किया गया है–

यागेश्चिततवत्तिनिरोधः ।। 2।।

जिसका तात्पर्य है कि चित्त की स्वाभाविक वत्ति का निरोध ही योग है। इसके अभ्यास के द्वारा व्यक्ति की मनश्चतेना को विविध स्थितियों में रूपान्तरित कर अतिचेतन अथवा समाधि की स्थिति प्राप्त की जा सकती है, जिसमे ंउसको अन्तः प्रज्ञा द्वारा ज्ञान का उदबोधन होता है। परम्परागत भारतीय चिंतन यथार्थ में विचार–शक्ति की पूर्ण तथा सुसमद्ध पद्धति है, जिसने व्यक्तिगत मनश्चेतना की स्थिति में परिवर्तन करके ज्ञानार्जन की प्रभावशाली विधि को विकसित किया तथा सामान्य चतेना में ज्ञान के अविरूपित संक्रमण के लिए न्याय, वैशषिक, सांख्य, मीमांसीय दशनीं का विकास किया क्योंकि परम्परागत भारतीय चिंतन की ज्ञानार्जन विधि का प्राथमिक स्रोत अन्तः प्रज्ञा द्वारा उद्भासित वैदिक ज्ञान है, अतः यह पद्धति अत्यन्त व्यक्तिनिष्ठ हो गई, जिससे उस की अभिव्यक्तियों तथा व्याख्याओं के अनेक रूप हो गए। तद्नुसार परम्परागत भारतीय विचार के व्यावहारिक रूप तथा उस पर आधारित आस्थाओं में भी अत्यधिक असमरूपता उत्पन्न हो गई। विचारों के सामाजिक उपयोग की दष्टि से प्राचीन भारतीय मनीषी विचारों की सामाजिक अपरिहार्यता से अवगत थे। आधुनिक सहस्राब्दिक विचार इस अभिधारणा पर आधारित हैं कि घटय जगत का वस्तुआत्मक ज्ञान तभी सम्भव है, जबकि व्यक्तिगत, भावनात्मक तथा वस्तुआत्मक घटकों को अन्य स्वतन्त्र प्रेक्षकों के इन्द्रियानुभतू प्रयोगों की सहसम्मत विधि द्वारा प्राप्त दष्टज्ञान से तुलना करके पथक कर लिया जाए। इसी कारण सहस्राब्दिक विचार सार्वभौमिक रूप से मान्य हैं।

परम्परागत विचार–शक्तिः सहस्राब्दिक युग का आधार

विज्ञान के आश्चर्यजनक विकास तथा तकनीकी के रूप में इसके समाज में सार्वभौमिक स्तर पर व्यापक उपयोग के द्वारा मानव के विचारों में एक क्रान्तिकारी परिवर्तन आया है तथा उसकी भौतिकीय सुख सुविधाओ ंमें आशातीत वद्धि हुई है। परिवहन तथा संचार के विकास से सार्वभौमिक समाज व्यवस्था की समरूपता की प्रक्रिया को बहुत बल मिला है। विकसित देशो ंका यह अनुभव रहा है कि तकनीकी के त्वरित विकास से समाज में व्यक्तिगत विचारों की अपक्षेा सामूहिक विचार–शक्ति को अधिक सुदढ़ता मिली है। मानव विचारों को समझने में आधुनिक अथवा सहस्राब्दिक युग इस दष्टिकोण से भी अधिक प्रभावशाली है क्योकि वह मानवीय सभ्यता के विकास हेतु अधिक भौतिक तथा व्यावहारिक विचारों का सजन व पोषण करने को उद्यत है। इसका मुख्य आधार परम्परागत विचार–शक्ति ही है। जिसकी सहायता से सहस्राब्दी में विचारों को अधिक ओजपूर्ण व मानव–हित को ध्यान में रखकर उन्नत किया जा सकता है। इस पक्रार के चिंतन से ही मानव व्यक्तित्व का अखण्ड स्तम्भ खड़ा किया जा सकता है। परन्तु इसके लिए आवश्यक है कि परम्परागत भारतीय संस्कृति को मानव विस्मृत न कर बठै तथा सभ्यता व संस्कृति के मध्य एक सामजंस्य स्थापित करे क्योकि बिना सांस्कृतिक आधार के मानव सभ्य होते हुए भी निरा प्रस्तर प्रतिमा सदृश ही होगा। इस प्रकार का मानव भौतिक उन्नति तो कर सकगेा किन्तु आध्यात्मिक चिंतन करने की उसमें सामर्थ्य न होगी। यही कारण है कि आज तथा आगे भी यदि व्यक्ति को अपने विचारों में नवीनता तथा सजनात्मकता लानी है तो वह अपने सनातन मूल्यों, यथा–सत्य, शिव, सुन्दर को अपने विचारों का अनिवार्य अंग बनाए और साथ ही भौतिकता की ही अन्धी दौड़ में सम्मिलित न होकर

अपने इष्ट का सदैव स्मरण रखे क्योकि उसके जीवन का अन्तिम तथा वास्तविक लक्ष्य इष्ट से साक्षात्कार करके स्वचेतनावस्था को प्राप्त करना ही है, चाहे वह अपने भौतिकवादी विचारों के द्वारा कितनी ही प्रगति क्यों न कर ले।

यदि परम्परागत भारतीय विचार–शक्ति का स्मरण किया जाए तो उसका मूल उद्देश्य न्यूनतम भौतिक संसाधनों द्वारा व्यक्ति को अपरिवर्तनशील सुखानुभूति अथवा सतत आनन्द की स्थिति को प्राप्त करने में सहायता पद्रान करना था। इस पक्रार के विचारों को व्यावहारिक रूप प्रदान करने के लिए व्यक्तिनिष्ठ पद्धति का प्रयोग किया जाता था। इस प्रकार की अच्छाइयों को अपने विचारों में धारण करके मनुष्य को सहस्राब्दी में प्रवेश करना चाहिए, जिसके लिए प्राचीन विचारों को आधुनिक चिंतन के साथ संश्लेषित करके भौतिक रूप से सुदढ़ तथा आत्मिक रूप से सुखी, सार्वभौमिक मानव समाज के विकास के उद्देश्यों की पूर्ति की जा सकती है। इस प्रकार के संश्लेषण के लिए यह आवश्यक है कि परम्परागत विचारों के प्रतिनिधायन की संरचना विधा को सर्वप्रथम समझा जाए जिससे इन मूल्यवान विचारों का ज्ञान उपलब्ध हो सकेगा। इस प्रकार के उद्देश्य की पूर्ति के लिए समस्त विश्व में उपलब्ध परम्परागत विचारों से सम्बन्धित सभी पाण्डुलिपियों को एकत्र करके कम्प्यूटर द्वारा उनकी सूची बनाई जाए। कम्प्यूटर की त्वरित सूचना अधिग्रहण क्षमता का उपयोग करके इन विचारों की व्याख्या विविध पद्धतियों के आधार पर करके इनका सूक्ष्म आलोचनात्मक पुनर्निरीक्षण किया जा सकता है।

परम्परागत विचार–शक्ति तथा आधुनिक विचार–शक्ति का सश्लेषण

आधुनिक विचार तथा परम्परागत विचार–शक्ति के सर्वतोमुखी संश्लेषण के प्रक्रम को पूर्ण करने के लिए यह आवश्यक है कि सहस्राब्दिक वस्तुआत्मकता की मलूभतू अभिकल्पना की परिवर्तित अभिधारणा के परिप्रेक्ष्य में आधुनिक युग की वैचारिक संरचना का पुनर्विन्यास किया जाए। यह तथ्य सर्वविदित है कि परम्परागत व आधुनिक विचारिक अभिकल्पनाओ ं में समरूपता तभी स्थापित की जा सकती है, जब आधुनिक पद्धति की विचार प्रतिनिधायन की विधा को समकलित तन्त्रात्मक विधा में रूपान्तरित किया जाए, तदोपरान्त सहस्राब्दिक परिकल्पनाओं की तुलना कम्प्यूटर विश्लेषण द्वारा प्राप्त विचारों के अर्थों से की जाए, प्राचीन भारतीय चिंतन के द्वारा चूँकि व्यक्ति परमसत्य को ज्ञात कर नित्य, निरपक्षे, अव्यक्त आनन्द को प्राप्त करने की स्थिति तक पहुँच जाता है, अतः इस प्रकार के विचारों को वर्तमान तथा भविष्य के साथ सश्लेषित करके सामूहिक रूप से अपरिवर्तनशील सुख अथवा सतत आनन्द की स्थिति प्राप्त करने की विधि तक पहुँच सकते हैं तथा यही विचार–शक्ति का मूलभतू उद्देश्य है, जिसकी पूर्ति के लिए कुछ बिन्दुओ ं को ध्यान मे ं रखना आवश्यक है–

1. सहस्राब्दिक युग अथवा वैज्ञानिक युग में केवल देश, काल, ऊर्जा तथा पदार्थ को ही प्रमुखता न देकर व्यक्ति की संवदेना, उसकी चतेना, भावना का भी पूर्ण ध्यान रखना होगा।
2. चेतना तथा मनस को समझने में आधुनिक युग की सक्षमता के लिए वैज्ञानिक वस्तुआत्मकता की अभिकल्पित अभिधारणा के अनुसार उसको प्रेक्षक से स्वतन्त्र घटय जगत के वस्तुआत्मक अस्तित्व के रूप में न समझकर वज्ञैानिक ज्ञानार्जन संक्रिया विश्लेषण के द्वारा अनुमोदित किया जाए।
3. भौतिक, शारीरिक, मस्तिष्क के साथ विचारों तथा चतेना के आधार पर मस्तिष्क की संक्रियात्मक क्रियाशीलता संभव है, अतः घटय जगत के अस्तित्व की अभिकल्पना वस्तुतः घटय जगत के ज्ञान की अभिकल्पनाओ ं का प्रेक्षक के मस्तिष्क की चतेना के क्षत्रे में ही अस्तित्व है, उससे स्वतन्त्र नहीं।
4. परम्परागत पद्धति को विचार–शक्ति की अत्यन्त विकसित पद्धति के रूप में समझना चाहिए, जिसके सावधानीपूर्वक विश्लेषण के द्वारा आधुनिक सहस्राब्दिक विचारों के संदर्भ में पुनः व्याख्या की जाएगी तथा नियोजनपूर्वक उसका सत्यापन होगा।

विचार में वैयक्तिक तथा सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के ज्ञान की अवधारणा की शक्ति है। गोयनका (1983) द्वारा

उदधत उपनिषद के निम्न श्लोकों के अनुसार–

निश्कलं, निष्क्रियं, शान्त, निरवद्यं, निरंजनं श्वे (6, 19)

अर्थात स्वयं में विचार अविभेदित, निष्क्रिय, शान्त, अनिर्वचनीय तथा निर्लेप होता है, उसकी अभिव्यक्ति ज्ञान के रूप में होती है। व्यक्ति जैसा व्यवहार करता है, उस व्यवहार से उसके विचार प्रतिबिम्बित होते हैं।

आधुनिक संकल्पना के अनुसार विचार को ज्ञान की अभिकल्पनाओं का समुच्चय माना जा सकता है। एक व्यक्तिगत मनस वचैारिक स्थिति में ज्ञान परिकल्पनाओं के सीमित समुच्चय को दष्टिगत करने में सक्षम होता है, जिसको अहंकार, वैचारिक शरीर, आत्मा अथवा कारण शरीर की संज्ञा दी जा सकती है। यह वैयक्तिक अथवा व्यक्तिगत विचार ही है जिसका असीमित विस्तार किया जा सकता है। इसके द्वारा ज्ञान की परिकल्पनाओं के असीमित समुच्चय को दष्टिगत करने की क्षमता होती है। विचार के अखंड व असीमित स्वरूप को सार्वभौमिक, ब्रह्माण्डीय विचार की संज्ञा दी जा सकती है क्योकि विचार के द्वारा ज्ञान को उत्पन्न, अवस्थित तथा नष्ट किया जा सकता है। अतः ध्यान व योग की प्रविधि से विचार के क्षत्रे में विस्तार किया जा सकता है।

कम्प्यटूर तन्त्र तथा मानव मस्तिष्क के घटकों में समरूपता

परम्परागत पद्धति का मूलाधार आत्मज्ञान है। आत्मज्ञान से तात्पर्य मानव व्यक्तित्व तन्त्र के उद्दीपन–अनुक्रिया व्यवहार को यथार्थरूप से समझना है। उद्दीपन–अनुक्रिया का परम्परागत विचार आज के युग में कम्प्यटूर तन्त्रों की आगत–निगर्त प्रक्रिया के समरूप है। वस्तुतः शर्मा (1988) ने कम्प्यटूर तन्त्र तथा मानव मस्तिष्क के घटकों में समरूपता स्थापित की–

सारणी 1: कम्प्यूटर तन्त्र तथा मानव मस्तिष्क के घटकों में समरूपता

क्रम सं.	कम्प्यटूर तन्त्र घटक	मानव मस्तिष्क घटक
1	केन्द्रीय प्रक्रमण इकाई (Central Processing Unit- CPU) की अस्थाई स्मति	चित्त
2	क्रियाशील प्रोग्राम	बुद्धि
3	नियंत्रक प्रोग्राम	मनस्
4	स्मति	स्मति

इस प्रकार देखा जा सकता है मानव ने विचार–शक्ति के बल पर आधुनिक युग में एसे यंत्र का निर्माण कर डाला जो समर्थ तथा अधिक तीव्रगति से परिणाम प्रदान करता है। इसका अर्थ यह हुआ कि व्यक्ति अपने विचारों के द्वारा विश्व की रचना व पनुर्गठन कर सकता है। शुद्ध विचारों का संसार पर तीव्रगामी प्रभाव पड़ता है। विचार संस्कृति के आधार पर भविष्य को उज्जवल बनाया जा

सकता है। व्यक्ति उचित विचारों का पोषण करके सभी निरर्थक अर्थों तथा निरर्थक सांसारिक विचारों का त्याग कर सकता है। इसके विपरीत मनुष्य अपने दुर्विचारों के माध्यम से आने वाले युग को विस्मत सीमा तक हानि मे ंपहुँचा सकता है। इस प्रकार का विचार संक्रमणीय होता है तथा समस्त ब्रह्माण्ड को दूषित करने की शक्ति रखता है। दुर्विचार सभी रोगों का प्रत्यक्ष कारण है।

निष्कर्ष

विचारों से व्यक्ति के व्यक्तित्व तथा अन्ततोगत्वा नवीन युग का निर्माण होता है। मानव सभ्यता का निर्माता तथा संस्कृति का पोषक है। जीवन की प्रत्यके महान व क्रान्तिकारी घटना व विश्व के इतिहास की पष्ठभूमि में शक्तिशाली विचारों का ही बल है। सभी अन्वेषण, आविष्कार, धर्म, दशर्न, जीवन–संरक्षण तथा जीवन–विनाश का आधार विचार हैं। यह शब्दो ंतथा भाषाओं के रूप में अभिव्यक्त होते हैं, साथ ही कृति के द्वारा कार्यान्वित होते हैं। शब्द विचारों के सेवक तथा कृति अन्तिम परिणाम हैं। अतः मनुष्य, जो एक नवीन युग का निमार्ता तथा संरक्षक है, उसे सदैव विचारों को प्रकट करने में सावधानी बरतनी चाहिए, तभी एक प्रगतिशील युग का निर्माण हो सकेगा। नवीन विचार–बल उत्पन्न करके नवीन सभ्यता की रचना की जा सकती है। नवीन सभ्यता मानव मनस को शान्ति प्रदान करे तथा उसे स्ववचेनावस्था की प्राप्ति में सहायक हो व साथ ही समाज में सम्पन्नता पद्रान करे। इसके अतिरिक्त विचार–शक्ति के बल पर मानव–मात्र की सेवा का गुण विकसित किया जा सकता है व परमचेतना के प्रति प्रेम व उसकी अनुभूति, असीम इच्छा भी जागत की जा सकती है।

नवीन युग की सभ्यता उनको उत्साहित करेगी जो दार्शनिक, धामिर्क व आध्यात्मिक विचारों को प्रोत्साहन देगें। मानव में गहनतम प्रवत्ति आध्यात्मिक प्रवत्ति है जो पूर्णरूप से अपने लक्ष्य की प्राप्ति पर बल देती है। नवीन सभ्यता का फल सबके लिए मल्यवान होगा, जिसमें सब को अपना–अपना विकास व्यक्तिगत भिन्नता के आधार पर करने की स्वतन्त्रता प्राप्त होगी। व्यक्ति नवीन सभ्यता मे ंउचित जीवन व्यतीत करके विश्वकल्याण व विश्वबन्धुत्व की भावना का विकास करेगा। इस प्रकार सहस्राब्दियाँ आदर्श युग व आदर्श समाज का प्रतिबिम्ब बन जायेंगी, जिसके लिए प्रत्येक व्यक्ति को आदर्श विचार–शक्ति उत्पन्न करने हतु संघर्ष करना होगा। परमचेतना सबका शुभ करे।

संदर्भ सूची

1. आरती सिंह. परम्परागत भारतीय चिंतन में चतेना–विज्ञान, विचार–शक्ति एवं ज्ञान–पद्धति का शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में समीक्षात्मक अध्ययन शोध–प्रबन्ध, फैकल्टी ऑफ एजूकेशन, दयालबाग़ एजूकेशनल इन्स्टीट्यटू, दयालबाग़, आगरा, 2002.
2. Goyanaka HK. Ishavasyadi Nav Upnishads: A Commentry on Nine Upnishads. Geeta Press: Gorakhpur, 1983.
3. Kuhn T. The Structure of Scientific Revolutions." Chicago University Press: Chicago, 1970, 4. पतञ्जलि, महर्षि. योगश्चिततवत्तिनिरोधः ।। 1.2।। योगसूत्र
4. Sharma A. A Synthesis of Scientific Understanding of Human Personality. Workshop on Vedic Mathematics at Rajasthan University: Jaipur, 1988.
5. Sommarfeld A. Atomic Structure Spectral Lines." Metheum and Company Ltd. London, 1964.
6. Weizenbaumg J. Computer as Idol. Bhakti Vedanta Institute: Bombay, 1988.